ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 14 4 से 10 जून, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 आ. कृ.-8-9

लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री ने आयोजित किया शानदार वेद प्रचार कुम्भ

ग्राम नेनोरा जिला-मंदसौर में वेद पारायण यज्ञ के रजत जयन्ती समारोह में आर्य समाज के विद्वानों का हुआ समागम

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया ध्वजारोहण के साथ भव्य उद्घाटन

स्वामी सुमेधानन्द (सांसद सीकर) के नेतृत्व में पिपलिया मण्डी में निकाली गई विशाल शोभा यात्रा

सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता अनेकों गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी ने की

आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने अपने पुरुषार्थ से अपने पैतृक ग्राम नेनोरा जिला-मन्दसौर (म. प्र.) में वेद पारायण यज्ञ के रजत जयन्ती समारोह का 16 से 20 मई, 2015 तक भव्य आयोजन करके आर्य समाज के इतिहास में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। ज्ञातव्य हो कि डॉ. सोमदेव शास्त्री जी अपने जन्म स्थान ग्राम नेनोरा में 1991 से प्रतिवर्ष निरन्तर वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार का आयोजन करते आ रहे हैं। जो विगत 24 वर्षों से निरन्तर समारोह पूर्वक सम्पन्न होता रहा है। इस वर्ष 16 से 20 मई तक वेद पारायण यज्ञ का रजत जयन्ती महोत्सव विशाल समारोह के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के विद्वान्, संन्यासी, महात्मा, भजनोपदेशक भारी संख्या में उपस्थित हुए। समारोह में 25 कुण्डीय विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र जी आचार्य गुरुकुल नोएडा रहे। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती (दिल्ली) ने की। इस भव्य रजत जयन्ती समारोह का उद्घाटन 16 मई को प्रात: 10 बजे सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के साथ किया और इसी दिन सायं 4 बजे से पिपल्या मण्डी में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका नेतृत्व सीकर राजस्थान के सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी ने किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में वेद प्रचार जन चेतना यात्राओं का विवरण देते हुए आर्य समाज के कार्यकर्ताओं, अधिकारियों, संन्यासियों, उपदेशकों, विद्वानों को सक्रिय करके किस प्रकार आर्य समाज के नये रूप को उभार कर प्रदर्शित किया है और उसके माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अन्धविश्वास, धार्मिक पाखण्ड तथा अन्य सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जबर्दस्त चेतना पैदा की है और इसका सारा श्रेय आर्य समाज को देते हुए हजारों लोगों को आर्य समाज से जुड़ने का आह्वान किया। इस अवसर स्वामी सुमेधानन्द जी का भी प्रभावशाली उद्बोधन हुआ और उन्होंने कहा कि वे लोकसभा के सदस्य बनें हैं किन्तु आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी का ऋण कभी नहीं भुला सकते।

इस रजत जयन्ती समारोह में आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने अनेकों विद्वानों, संन्यासियों, भजनोपदेशकों तथा आर्य समाज के नेताओं को आमंत्रित करके वेद प्रचार कुम्भ जैसा दृश्य प्रस्तुत कर दिया। पूरे गांव को संजाया गया था। गाँव के हर घर में ओ३म् ध्वज लहरा रहे थे। समस्त ग्रामीण जन समारोह को सफल बनाने के लिए प्राणपण से जुटे हुए थे। ग्राम का कोई घर ऐसा नहीं था जिस घर में अतिथियों को न ठहराया गया हो और जहाँ मन को प्रफुल्लित करने वाला आतिथ्य न प्राप्त हुआ हो। इन सब कार्यों से आचार्य सोमदेव जी के आकर्षक व्यक्तित्व और सहयोगात्मक छवि के दर्शन होते हैं। ग्राम के बाहर विशाल पण्डाल और भव्य मंच का निर्माण किया गया था जिस पर संन्यासी विद्वान् तथा अतिथियों को सम्मान सहित बैठाया जाता था। इतना आकर्षक समागम और प्रेरणास्पद कार्यक्रम आर्य समाज के किसी विद्वान् ने करवाया हो ऐसा स्मरण नहीं आता। प्रात:काल 25 यज्ञ कुण्डों पर विशाल यज्ञ दोपहर को विभिन्न सम्मेलन और रात्रि में हजारों की संख्या में उपस्थित आस-पास के क्षेत्रों से आये श्रोताओं को विद्वानों के उद्बोधन से प्राचीनकाल के ऋषियों द्वारा किये गये आयोजनों का चित्र सा दिखाई पड़ रहा था। नि:संदेह इस आयोजन से एक विशेष प्रेरणा विद्वानों, कार्यकर्ताओं और आर्य समाज के अधिकारियों को मिलनी चाहिए कि वो भी आचार्य सोमदेव जी की तरह अपने-अपने गांवों, क्षेत्रों में इसी प्रकार के भव्य आयोजन करें तो देश का काया पलट हो सकता है।

प्रतिदिन आचार्य जयेन्द्र जी के ब्रह्मत्व में होने वाले विशाल यज्ञ में 250 किलो गाय का शुद्ध देशी घी, 500 किलो सामग्री तथा एक हजार किलो समिधा और 50 किलो चन्दन का उपयोग करके पूरे वातावरण और क्षेत्र को सुगन्धि प्रदान की गई तथा वैदिक ऋचाओं के सस्वर गुंजन से सारा वातावरण यज्ञमय किया गया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. जयेन्द्र आचार्य, स्वामी सुमेधानन्द सांसद सीकर, श्री सत्यव्रत सामवेदी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सहित अनेकों संन्यासियों का आशीर्वाद एवं

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

12 जून, पुण्यतिथि पर विशेष

आत्मीयता के प्रतीक : स्वामी इन्द्रवेश

- डॉ. शिवकुमार शास्त्री

विचार-विचक्षण पाठकवृन्द! मेरा स्वामी इन्द्रवेश जी से पहला साक्षात्कार गुरुकुल झज्जर में हुआ था, तब वे इन्द्रदेव मेधार्थी के नाम से जाने जाते थे। सौम्य स्वभाव, आकर्षक व्यक्तित्व, विनम्रता की प्रतिमूर्ति, लम्बा कद, गौर वर्ण, बलिष्ठ शरीर, शालीन व्यवहार, योग्यतम विद्वान्, महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने की लालसा विशेषकर राजनीति वाला पक्ष, ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी के प्रति कौन अनायास आकर्षित नहीं होगा? उनमें गैर को भी अपना बनाने की चुम्बकीय शक्ति थी, मैं भी बरबस उनकी ओर आकर्षित हुआ।

सन् 1970 के आसपास सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में कपूरथला (पंजाब) में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। हजारों की उपस्थिति थी। आबाल-वृद्ध नर-नारियों का समूह कपूरथला में समा नहीं पा रहा था, ऐसी उपस्थिति फिर मैंने आज तक के अपने जीवन में नहीं देखी। बड़े-बड़े राजनेता, आर्यनेता, महोपदेशक, संत-महंत, युवक-युवतियाँ उस समारोह में अपनी उपस्थिति से सबको आकर्षित किए हुए थे। मैं भी एक वक्ता के रूप में बड़े लोगों के बीच मंच पर बैठा हुआ अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा था। उस दिन का विषय था - ''आर्य समाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए।'' मैंने इस विषय का तर्कपूर्ण समर्थन किया। जनता जनार्दन ने कई बार करतल ध्वनि से इसके पक्ष में हामी भरी। अस्तु!

कार्यक्रम की समाप्ति पर आर्य समाज एवं राष्ट्र के यशस्वी नेता तथा पत्रकार आदरणीय लाला जगतनारायण जी ने मुझे अपने साथ जालंधर तक चलने को कहा और मैं जहाँ उनकी कार खड़ी थी वहाँ तक जाने के लिए उनके पीछे-पीछे चल दिया। इसी बीच स्वामी इन्द्रवेश जी मंच से हमारी तरफ तेज गति से आए और भावविभोर होकर मेरे द्वारा विषय प्रतिपादन की प्रशंसा करने लगे। उसके बाद तो आत्मीयता घनिष्ठता और घनिष्ठता मित्रता में बदल गई।

सन् 1971 में मैं हिन्दू शिक्षा महाविद्यालय सोनीपत (हरियाणा) में पढ़ता था। रहता तो सोनीपत में था, परन्तु खाना खाने आपने गांव जाता था। एक दिन जब मैं प्रातः अपने घर पर खाना खाने के लिए पहुँचा तो स्वामी इन्द्रवेश और जुआं के श्री धर्मपाल जी को अपने घर पर बैठे देखा। मैं एक ग्रामीण परिवेश से सम्बन्ध रखता हूँ। उन दिनों गांवों में मेज-कुर्सी नहीं होती थी, सोफासैट की तो बात ही क्या? स्वामी जी मेरे पिता जी के साथ नीचे बोरी पर बैठे थे, मेरी माँ मेरे लिए वहीं खाना बना रही थी। स्वामी इन्द्रवेश जी को ऐसे वातावरण में भी प्रसन्नमुद्रा में बैठा देखा मैं गद्गद् हो गया। आज तो उल्टी गंगा बह रही थी, कृष्ण सुदामा के घर जो आए हुए थे।

स्वामी इन्द्रवेश रोहतक से सांसद बने, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित हुए, विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के अनेक वर्षों तक कुलाधिपति रहे परन्तु मैंने उनके जीवन में कभी भी अहं के भाव नहीं देखे। लम्बे काल तक आर्य समाज के वरिष्ठ नेता, स्वामी अग्निवेश के साथ उनका भी अपमान करते रहे, आर्य जनता की नजरों में गिराने का असफल प्रयास करते रहे परन्तु इन्द्र तो शान्तमना महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाते रहे, समाजसेवा में कभी प्रमाद नहीं किया।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के भव्य समारोहों में एक-दूसरे के प्रति वैर-विरोध रखने वालों को मंच पर इकट्ठा बैठा देखकर मुझे हमेशा स्नेहमय आशीर्वाद दिया करते थे।

आज ऐसी भव्यमूर्ति को अपने बीच न पाकर एक खालीपन का अनुभव होता है। परन्तु मृत्यु तो अपरिहार्य है, इसका न तो कोई विकल्प है और न आदमी की कोई बिसात। ईश्वर की न्याय व्यवस्था को नतमस्तक होकर स्वीकार करना पड़ता है।

आज उस तपस्वी संन्यासी की पुण्यतिथि पर उन्हें अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ परमपिता से प्रार्थना करता हूँ कि हमें इतना बल और सामर्थ्य दो जिससे हम उनके गुणों को जीवन में धारण कर उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने में समर्थ हो सकें।

- प्रधान सम्पादक 'मनुर्भव'
मो.:-9810095061

बच्चों का भविष्य एवं उनकी समस्याएँ

- मृदुला अग्रवाल

बच्चों का भविष्य तीन तरह की समस्याओं में उलझ कर रह गया है :-

1. दूरदर्शन, फेसबुक, इण्टरनेट, चलभाष इत्यादि।
2. बाल्य श्रम
3. बाल यौन शोषण

बचपन मानव का निर्माण काल होता है। एक बालक सफल मनुष्य तभी बन सकता है, जब उसकी नींव सुदृढ़ हो। महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि बालकों का सही निर्माण माँ के गर्भ से ही आरम्भ हो जाता है। बच्चों को उच्च संस्कार देने के लिए तथा उनके शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए, माता-पिता को अपने हृदय की इच्छाओं पर अंकुश रखकर गर्भ के समय से ही मर्यादा का पालन करना चाहिए। जैसे, महाभारत में अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन की शिक्षा माता के गर्भ में ही प्राप्त हुई थी।

''मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्।
पिपृतां नो भरीमभिः॥''

- यजुर्वेद, अध्याय-13, मंत्र-32

भावार्थ - हे माता-पिता। जैसे बसन्त ऋतु में पृथिवी और सूर्य सब संसार का धारण, प्रकाश और पालन करते हैं, वैसे ही तुम दोनों अपनी सन्तानों को अन्न (शुद्ध आहार), विद्या-दान और उत्तम शिक्षा देकर पूर्ण विद्वान् पुरुषार्थी करो। आजकल हमारे देश एवं समाज की अवस्था शनैः-शनैः पतन की ओर अग्रसर हो रही है। रात-दिन बलात्कार हो रहे हैं। चारों तरफ भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। धन और विलासिता में लोग डूबे जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता की ओर झुकाव सबसे बड़ी बाधा बन गया है। बच्चों का भविष्य नष्ट होता जा रहा है। ''दूरदर्शन'' पर युवतियों का आधुनिकता के चक्कर में अपने नश्वर शरीर की नुमाइश एवं कामुकता की हद को पार कर जाना भारतीय वैदिक संस्कृति पर कलंक जैसा है। समाचार पत्रों में, पत्रिकाओं में अश्लील व नंगी तस्वीरें, सबके घरों में हर उम्र के बच्चे देखते हैं, उन बच्चों के भावी सुचरित्र नागरिक बनने की संभावना को तिलांजलि देना है।

आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों (फेसबुक, इण्टरनेट, चलभाष इत्यादि) से बालकों को एक तरफ उन्नति करने का अवसर मिला है तो दूसरी तरफ उससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। बालक के जीवन का सबसे अहम् स्थान स्कूल है। वहाँ का वातावरण सीधा उनके मन पर प्रभाव डालता है। उन्हीं स्कूलों में ''इण्टरनेट'' को अनिवार्य घोषित किया जा चुका है। इण्टरनेट पर पढ़ाई के अलावा भी तो नाना प्रकार के अनुचित मार्ग पर ले जाने वाले आकर्षण है। इन सबकी वजह से बालकों का जीवन तो अनैतिकता के गर्त में जा गिरा है। ऐसी परिस्थिति में माता-पिता आचार्य का उत्तरदायित्व होता है कि बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें। अच्छे संस्कार देते हुए उनको सदाचार से युक्त, सुयोग्य एवं लायक बनावें। ''माता निर्माताः भवतिः'' माता बच्चे की प्रथम गुरु है। माता को उन्हें कुकर्मों से बचाना होगा, किसी भी अंग से कुचेष्टा न करने पावे ऐसा प्रयास करना होगा। उन्हें सत्यभाषण की आदत डालें, मादक द्रव्यों से दूर रखें। ऋग्वेद, मण्डल-7, सूक्त-2, मंत्र-11 का भावार्थ :-

''हे विद्वान्! जैसे सूर्य का प्रकाश दिव्य गुणों के साथ नीचे भी स्थित हम सभी को प्राप्त होता है और सत्य विद्या से युक्त उत्तम संतान वाली माता सुखपूर्वक स्थित होती है, वैसे ही विद्वान् हम सभी को, विशेषकर बालकों को, आप प्राप्त होकर अच्छी शिक्षा से सुखी कीजिए।''

स्वस्थ सामाजिक वातावरण एक बालक के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। परन्तु आजकल का आधुनिक समाज उसी बालक को ''बाल्य श्रमिक'' बनाकर स्वयं को गर्वित महसूस कर रहा है। ''बाल्य-श्रम'' पूरे विश्व की समस्या है। बाल्य-श्रम का औद्योगिक क्रांति में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। बच्चों को बाल्य-श्रमिक बनाने के दो मुख्य कारण हैं - (1) गरीबी और (2) शिक्षा का अभाव। इन दोनों कारणों की वजह से, मजबूरी में, आज लाखों-करोड़ों की संख्या में इन मासूम एवं सरल बच्चों से हानिकारक रासायनिक पदार्थों के मध्य कल-कारखानों में, घरों में, चाय दुकानों में, ढाबों में, तरह-तरह के अत्याचारों को सहन करते हुए काम करवाया जा रहा है। बच्चे पूरे विश्व का भविष्य हैं। उन्हें कितनी जिम्मेवारियाँ सम्भालनी हैं - परिवार की, समाज की, राष्ट्र की एवं विश्व की भी। अगर बचपन में ही बाल्य-श्रमिक बन जायेंगे तो कैसे अच्छे तथा प्रतिष्ठावान नागरिक बन पायेंगे। भारत में C.R.Y. (Child Rights and You) के स्वयं सेवी इस समस्या का समाधान निकालने की चेष्टा तो कर रहे हैं। परन्तु सरकार का भी उत्तरदायित्व है कि गरीबी के कारण बच्चों की शिक्षा में अभाव न आवे।

अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-2-6, मंत्र-3, 4, 5 के अनुसार माता-पिता प्रयत्न करें कि सन्तान उत्तम गृहस्थ बने, जितेन्द्रिय होकर अपने दोषों और दूसरे शत्रुओं का नाश करें। अन्नवान्, बलवान् एवं धानवान् बनें। विद्वान् लोग उचित शिक्षा से उनकी रक्षा करें। प्रकृति से उपकार ग्रहण करके संसार में प्रवेश करें एवं आनन्द भोगें।

''बाल-यौन-शोषण'' बच्चों के लिए एक बहुत ही जटिल समस्या है। ज्यादातर घरवाले ही यह काम करते हैं। बच्चों को किस तरह सुरक्षित रखा जाये - यह एक बड़ा प्रश्न है। घर-घर में जाकर घरवालों की, बच्चों के माता-पिता को, स्कूलों में शिक्षकों को, अन्य वयस्कों को इस विषय में जानकारी देना बहुत जरूरी है। जिससे वे बच्चों की सुरक्षा करने को अपना कर्त्तव्य समझें और उसको निभाने का हर सम्भव प्रयास करें। बच्चों को सतर्क करना होगा। उन्हें शरीर के गुप्त अंगों के बारे में प्रशिक्षण देना होगा, जिससे कोई उन अंगों को छुए तो वे निर्भीकता से दूसरों को बोल सकें। हमें इसके लिए बच्चों के साथ मित्रों जैसा व्यवहार करना होगा। उन्हें विश्वास दिलाना होगा कि जब भी उन्हें जरूरत हो हम उनकी मदद के लिए सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। बच्चे निश्चयात्मक प्रशिक्षण के द्वारा आत्म-विश्वास एवं निर्भयता से अपने विश्वासपात्र को पहचानें व चुनें तथा उनसे अपनी समस्या की चर्चा भी करें। उन्हें ये भरोसा रहे कि वे जब चाहें हमारे पास आ सकते हैं, अपनी गलतियों को भी बता सकते हैं। दरअसल, हमारा सामाजिक वातावरण कुछ ऐसा निर्मित है कि बच्चे बड़ों के सामने कुछ बोल नहीं पाते। बड़े जो करें वही सही है - यह बात बच्चों के मन में कूट-कूट कर भरी रहती है। इस वजह से बड़े ऐसा कार्य करें (यौन-शोषण का) तो भी बच्चे डर से कह नहीं पाते। उसका शिकार होते चले जाते हैं। यह कार्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जारी रहता है। अगर बच्चों को बचपन में ही नियंत्रित न किया जाये या उनका डर न मिटाया जाये तो उनका सम्पूर्ण जीवन इससे प्रभावित होकर भावनात्मक एवं मानसिक प्रतिक्रियाओं से नष्ट हो सकता है। उन्हें यह अनुभूति न होवे कि उनके साथ विश्वासघात हुआ है। बच्चों का दुरुपयोग करने वाले व्यक्ति को चेतावनी देना जरूरी है। बच्चो को अपने माता-पिता से बातचीत करने का प्रोत्साहन मिलना चाहिए। आजकल माता-पिता को अपने बच्चों की बातें सुनने की फुर्सत नहीं मिलती या वे उनकी बातें सुनना ही नहीं चाहते। समस्याओं से मुँह न फेरकर, सकारात्मक विचारों के साथ हमें उसका समाधान निकालना होगा और बच्चों के जीवन को सुधारना होगा जो कि सम्भव है। लाखों-करोड़ों बच्चों की यह समस्याएँ हैं जो दुःखभरी हैं पर हैं सच्ची। स्वामी दयानन्द जी की आदर्श शिक्षा एवं वेदों के अध्ययन की आवश्यकता है। वेदों में सांसारिक एवं पारमार्थिक उन्नति दोनों का परिपूर्ण उपदेश प्रस्तुत है। स्कूल एवं कॉलेज में अगर वैदिक शिक्षा और संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य कर दिया जावे तो एक सम्भावना की आशा की जा सकती है कि देर-सवेर बच्चों में धीरे-धीरे सुधार आ जावेगा। एकत्व, मित्रता, शान्ति, व्यवहारिक ज्ञान की जीवन में प्रधानता होगी। विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करना माता-पिता-आचार्य, एवं सम्बन्धियों का प्रमुख कर्त्तव्य है। आध्यात्मिक विचारशक्ति एवं प्रभुभक्ति से उनके जीवन को विकसित करना होगा। वेद-विरुद्ध आचरण का निषेध कर, गुरु एवं विद्वान् लोग अपने ज्ञानरूपी प्रकाश से, राष्ट्र के भावी नागरिक अर्थात् बच्चों के भविष्य को समस्या रहित करके चमका देवें।

- 19-सी, सरत बोस रोड, कोलकाता

सार्वदेशिक सभा द्वारा राहत कार्य प्रारम्भ
नेपाल के भूकम्प पीड़ितों की दिल खोलकर सहायता करें

नेपाल में आये भयंकर भूकम्प से हुए जानमाल के नुकसान से आप भली–भांति परिचित ही होंगे। 25 अप्रैल को दोपहर 11.45 बजे 7.9 तीव्रता के ताकतवर भूकम्प के कारण नेपाल में जब पृथ्वी ने कांपना प्रारम्भ किया और जो तांडव शुरू किया उससे नेपाल देश का अधिकांश भाग विनाश की चपेट में आ गया। जगह–जगह मकान, पेड़–पौधे गिर गये और संचार माध्यम ठप पड़ गया। नेपाल की ऐतिहासिक धरोहरें तथा बड़ी–बड़ी बिल्डिगें ताश के महल की तरह धराशाई हो गई। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भूकम्प कितना भीषण तथा विनाशकारी था। इस प्रलयंकारी भूकम्प के कारण नेपाल में जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है तथा कई हजार लोगों की जीवन लीला समाप्त हो गई है तथा हजारों लोग अपना घर–बार तथा अपना सब कुछ गंवा चुके हैं। घायलों की स्थिति और भी ज्यादा खराब है। भूकम्प का समाचार प्राप्त होते ही सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक आहूत की गई और राहत कार्यों के लिए चर्चा की गई। तत्काल नेपाल में काठमांडू स्थित आर्य समाज के माध्यम से पीड़ितों को राहत पहुँचाने का निर्णय लिया गया। नेपाल में दूर–दराज के इलाकों में जहां सब कुछ नष्ट हो गया है और वहाँ पर अभी तक कोई दल राहत के लिए नहीं पहुँचा है ऐसे स्थानों पर राहत पहुँचाने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं।

आर्य समाज मानवता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहा है। पूर्व में आये विभिन्न दैवीय प्रकोपों में आर्य समाज ने प्रशंसनीय राहत कार्य किया है। इस बार भी नेपाल में आये इस प्राकृतिक आपदा में पीड़ित मानवता को सहायता प्रदान करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने बड़े पैमाने पर प्रयास प्रारम्भ कर दिये हैं तथा एक राहत दल नेपाल जाने के लिए तत्पर है।

सार्वदेशिक सभा ने देश की समस्त आर्य जनता से प्रार्थना की है कि पीड़ितों की सहायतार्थ वे आगे आयें और अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा सीधे सार्वदेशिक सभा कार्यालय "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर भेजें। जिससे भूकम्प प्रभावित लोगों को सहायता तथा राहत पहुँचाई जा सके। आर्य समाज इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं में सदा ही अग्रणी रहा है। इस पुण्य कार्य हेतु आप सदैव की भांति इस आपदा में भी अधिक से अधिक सहयोग राशियाँ भिजवा कर सार्वदेशिक सभा के राहत कार्यों में सहयोग प्रदान करेंगे। जो कार्यकर्ता भूकम्प पीड़ित राहत कार्यों में सहयोग देना चाहते हैं उनका भी स्वागत है वे सभा कार्यालय में सम्पर्क करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग पीड़ितों के लिए बहुत बड़ा सम्बल होगा।

स्वामी आर्यवेश	प्रो. विट्ठलराव आर्य	पं. माया प्रकाश त्यागी
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
ई मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in, aryavesh@gmail.com
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985

Incarnation of God

How the theory of incarnation of God, became a common belief amongst the Hindus and also amongst other followers of religion, is a very interesting subject. Even the Western philosophers agree that there is not trace of this theory in Vedas and Upnishads. The Christian belief is also of personal God which is more or less shared by Islam. A description of this idea occurs in verses 7 and 8 of Gita.

The interpretation of these verses is that to safeguard the sages, destroy evil doers, and for restoration of Dharma (religion) Shri Krishna manifests himself in all ages. It is no where clearly mentioned in the above verses that God who is all pervading is born in physical form to ac-complish the afore-said objectives. Ac-cording to some thinkers, the idea of incarnation of God entered the Arya Hindus belief when they had become weak in mind and physique. This idea was a consolation to them that the Avtar will take revenge from those who were oppressing the Arya Hindus. In fact the high personalities like Shri Rama and Shri Krishna and the golden deeds they performed, prove that they were liberated souls who according to Swami Dayananda descended on the earthly plane to guide the people in the discharge of their duties.

Now let us consider about the significance of Dharma. Commonly people think that Dharma is another word for religion. But it is not so. Dr. Radhakrishna, the then President of India, in his speech at the National Integration Conference held in 1961 declared that Dharma is that which holds society together, whatever divides disintegrates society, creates sects, that is Adharma.

Shri Rabindra Nath Tagore defines Dharma as duty. But I think the Dharma referred to in two verses of Gita quoted above, apparently means Arya Dharma. Now let us examine from practical point of view whether it is absolutely essential for God to take up physical form to ac-complish certain objectives. In our times, we have witnessed the strikes by postmen, navy men, clerical staffs, bus conductors etc. But it has never come to the notice of any one that the Director General of Post Offices or the Minister incharge of that department doing the job of a postman during the course of postal strikes. Similarly when clerical staff resorted to strikes and office work was paralysed the high officials of that department did not perform the duties of clerks. The same occured in the case of all other strikes. From this, it can be safely inferred that those holding high positions, would never like to shift to lower status whenever there is a departure from duty by their subordinates. But the propagandists of the theory of incarnation of God want us to believe that God, the highest authority in the universe, does not mind to take up the lower and limited status casting off all His highest attributes, merely to carry out certain objectives defined in the Gita. This is in fact devoid of reason and common sense. There are no valid reasons to hold that God took up the physical forms merely to kill cruel kings namely Harnakashyap, Ravana, Kansa etc. and to settle the disputes over kingdom between Kauravas and Pandavas princes. How surprising it is that God is not caring to descent on the earthly plane at the present times when Dharma's more degenerating than the times or Ramayan and Mahabharat?

The other significant point is that Gautam Buddha has been classified as 22th Avtar (incarnation of God in the Puranas, although Budhism founded by Buddha basically differs in many doctrines of Vedic Dharma and its teachings had at one time in the history of India; reduced the followers of Arya Dharma to mere minority sect. However Adi Sankeracharya who is credited with the work of survival of Vedic Dharma, was not exalted to the position of Avtar. Similarly Raja Ram Mohan Ray, Swami Dayananda, Swami Ram Kirshna Paramhans and Swami Vivekananda are not called Avtar although all of them served the case of revival of Vedic Dharma so brilliantly. From all that has been discussed above it is crystal clear that there is not the slightest justification to believe in the theory of incarnation of God.

'So high is His lofty grandeur, yea, the Absolute One is even greater than this. All the existing beings are (only) one part of His (effulgence) and three parts of His immortal (essence) exist in His selfluminous being. - Yaj. XXXI.3

- S. B. Mathur

पृष्ठ–1 का शेष

लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री ने आयोजित किया शानदार वेद प्रचार कुम्भ

प्रतिष्ठित विद्वानों एवं नेताओं का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

इस भव्य समारोह में दिनांक 17 मई को आर्य युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. ने की तथा प्रमुख वक्ताओं में स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री, डॉ. मोक्षराज जी तथा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये। दिनांक 18 मई को आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. प्रियंवदा वेद भारती ने की तथा संयोजिका रही डॉ. सोमदेव जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री जी। सम्मेलन को डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, श्रीमती संध्या आर्या, डॉ. सीमा तथा श्रीमती शन्नोदेवी आदि ने उद्बोधन प्रदान किया विशेष रूप से स्वामी आर्यवेश जी द्वारा कन्या भ्रूण हत्या एवं महिला उत्पीड़न के विरुद्ध बेहद प्रभावोत्तेजक व्याख्यान दिया गया और बेटी बचाओ अभियान की पूरी रूपरेखा तैयार की गई। 19 मई को सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा संयोजन श्री जीव वर्धन शास्त्री जी ने

किया। प्रमुख वक्ता के रूप में सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, श्री अशोक आर्य, श्री मद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय सहित अनेकों विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये। 19 मई को ही दोपहर 1 से 3 बजे तक आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी सच्चिदानन्द (यमुनानगर) ने की तथा संयोजन आर्य भजनोपदेशक परिषद् के मंत्री श्री कैलाश कर्मठ ने किया।

20 मई को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति हजारों की संख्या में उपस्थित श्रोताओं की उपस्थित में सम्पन्न हुई यज्ञ के अवसर पर प्रतिदिन श्री प्रशस्यमित्र शास्त्री राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित, डॉ. वेदपाल, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, आचार्य विश्णुमित्र आदि विद्वानों के उपदेश निरन्तर होते रहे। पूर्णाहुति के दिन भजन, प्रवचन, आशीर्वाद एवं सम्मान के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

ज्ञातव्य हो कि यह विशाल आयोजन आचार्य सोमदेव जी के व्यक्तिगत धन से आयोजित किया गया था जिसे उन्होंने अपने सारे जीवन में वेद प्रचार और आर्य समाज के कार्यक्रमों में दक्षिणा आदि के द्वारा उपार्जित किया था। अपने जीवन भर की कठिन परिश्रम से कमाई गई धनराशि को आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगा देना वास्तव में एक ईश्वरीय प्रेरणा है और आर्य समाज के लोगों को इस ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरणा लेनी चाहिए। सभी आमन्त्रित संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों को समुचित सम्मान, शॉल भेंटकर तथा भरपूर दक्षिणा देकर आचार्य सोमदेव जी ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है और वह भी अपनी व्यक्तिगत जमापूंजी से। शायद ही ऐसा कोई उदाहरण हो कि जिसमें आर्य समाज के विद्वान् द्वारा 10-15 लाख रुपये आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में और विद्वानों, संन्यासियों और भजनोपदेशकों को भरपूर सम्मान तथा दक्षिणा आदि में व्यय किये गये हों।

विभिन्न अवसरों पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस भव्य आयोजन के सफल आयोजक डॉ. सोमदेव जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि सोमदेव जी एक आर्य विद्वान हैं और उन्होंने जीवनभर दूसरों को उपदेश दिये और संस्कार प्रदान किये आज उन्होंने स्वयं वह सब करके दिखाया है और अपनी जन्मभूमि नेनोरा में एक विशाल वेद प्रचार कुम्भ का दृश्य उपस्थित कर हम सबको आश्चर्य चकित कर दिया है। स्वामी जी ने कहा कि यदि आर्य समाज के कार्यकर्ता, विद्वान् और संन्यासी तथा आर्य समाज के पदाधिकारीगण डॉ. सोमदेव जी की तरह ही प्रवृत्ति को अपना लें और अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर अपने-अपने गांवों में इस प्रकार के भव्य वेद प्रचार के आयोजन करें तो आर्य समाज का कार्य चरम पर पहुंच सकता है। उन्होंने कहा कि आज हमारा देश संक्रमण काल से गुजर रहा है चारों तरफ अन्याय और असामाजिकता का दृश्य दिखाई दे रहा है। धन का महत्त्व बढ़ रहा है और संस्कार क्षीण होते जा रहे हैं। हमारा युवा संस्कार विहीन होता जा रहा है तथा पथभ्रष्ट हो रहा है। कन्या भ्रूण हत्या तथा शराब के अन्धाधुन्ध प्रयोग से देश पतन के गर्त में जा रहा है। आज आर्य समाज के ऊपर बहुत बड़ा दायित्व आ गया है। हम सबको मिलकर कार्य करना होगा। गांव-गांव और नगर-नगर में आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार करना होगा तथा युवाओं को साथ में लेना होगा। जगह-जगह सम्मेलन तथा वेद प्रचार यात्राओं के माध्यम से आम जनता को जागरूक करने की आवश्यकता है। लोग आर्य समाज के साथ जुड़ने के लिए तैयार हैं हमें बस योजनाबद्ध ढंग से कार्य करना है। स्वामी जी ने कहा कि अभी कुछ दिन पूर्व पूरे हरियाणा प्रान्त में और उसके बाद हरिद्वार से मध्य प्रदेश तक वेद प्रचार यात्रा का आयोजन किया गया तथा सैकड़ों लोगों को साथ लेकर हमने सैकड़ों जगह सभायें की यात्रायें निकाली जिनका अनुभव हृदय को उत्साहित करने वाला है और हमने पूरे देश में इस प्रकार की यात्राएं निकालने का संकल्प लिया है। लोगों में भारी उत्साह है और लोग जागरूक हो रहे हैं। आवश्यकता केवल कार्य करने की है। स्वामी जी ने कहा कि आप सब यहां से संकल्प लेकर जायें कि आचार्य सोमदेव जी की तरह ही अपने अपने क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित करेंगे और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में कर्मठता के साथ कार्य करेंगे।

इस अवसर पर विभिन्न स्थानों से आये भजनोपदेशकों ने अपने कार्यक्रमों के द्वारा समा बांध दिया। जिनमें मुख्य रूप से 90 वर्षीय श्री मामचन्द पथिक, श्री सत्यपाल सरल (देहरादून), कुलदीप आर्य (बिजनौर), श्री श्यामवीर राघव (दिल्ली), श्री भानुप्रकाश आर्य (बरेली), श्री कैलाश कर्मठ (कोलकाता), श्री नरेश दत्त आर्य (बिजनौर), श्री सुखपाल विश्वकर्मा (सहारनपुर), श्री भीष्मदेव आर्य, श्री नरेन्द्र आर्य सहित अनेकों भजनोपदेशकों ने अपनी उपस्थिति से चार चांद लगा दिये। समस्त कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरणादायक तथा दिल को छू लेने वाला था। समापन समारोह का उस समय बेहद भावुकतापूर्ण बन गया जब आचार्य सोमदेव जी ने सिर पर बांधी हुई पगड़ी उतारकर स्वामी प्रणवानन्द जी को सौंपी और आग्रह किया कि ये पगड़ी उनके बड़े पुत्र श्री प्रणव शास्त्री के सिर पर रख दें ताकि अगले 25 वर्ष वे वेद पारायण यज्ञ की परम्परा को इसी प्रकार से चलाये रखें। श्री सोमवेद जी ने इस अवसर पर भावुक होकर रूंधे गले से जब अपनी मन की बात कही तो सैकड़ों लोग अश्रुपूरित हो गये और वातावरण में एक विशेष स्थिति बन गई। स्वामी प्रणवानन्द जी ने श्री सोमदेव जी के बड़े पुत्र श्री प्रणव जी के सिर पर पगड़ी पहनाकर पिता की जिम्मेदारी उनके कन्धों पर डाल दी और उन्हें आश्वस्त किया कि वे वेद पारायण यज्ञ की परम्परा को पूरी श्रद्धा के साथ निभायें, हम सब इसमें उनका साथ देंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने भी इस अवसर पर विशेष आशीर्वाद दिया। इस पूरे कार्यक्रम में सर्वश्री अरूण अब्रोल (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई), विश्वभूषण आर्य (पूर्व प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रूज मुम्बई), धर्मवीर बत्रा (प्रधान आर्य समाज पंचकुला), अशोक गुलाटी (उपप्रधान आर्य समाज नोएडा), खुशहालचन्द आर्य (कोलकाता), इं. प्रियव्रतदास (भुवनेश्वर), बलदेव राज आर्य (जयपुर), लक्ष्मीनारायण भार्गव (पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ), आचार्य योगेन्द्र कुमार उपाध्याय, रणधीर शास्त्री, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी राजेश्वरानन्द जी, आचार्य संतराम जी आदि की गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बनी। इस प्रकार कार्यक्रम बेहद सफल रहा।

युवाओं के प्रेरणास्रोत लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् स्वामी इन्द्रवेश जी की स्मृति में
स्वामी इन्द्रवेश स्मृति अभिनन्दन समारोह एवं युवा संकल्प दिवस का
स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली रोहतक में भव्य आयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य विद्वानों को विभिन्न सम्मानों से किया जायेगा विभूषित

दिनांक 12 जून, 2015

स्वामी इन्द्रवेश

कार्यक्रम

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य विरक्त सम्मान

स्वामी रामवेश जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति विद्वत् सम्मान

आचार्य वेदव्रत शास्त्री (दयानन्द मठ रोहतक)

डॉ. शिव कुमार शास्त्री (पूर्व प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति भजनोपदेशक सम्मान

कुलदीप आर्य (बिजनौर) एवं पं. मामचन्द पथिक (हरिद्वार)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति युवा संगठनकर्ता सम्मान

1. स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल)
2. रामनिवास गांधी (कोसली)
3. इन्द्रपाल आर्य (सिरसा)
4. जितेन्द्र सिंह (बल्लभगढ़)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य महिला संगठनकर्ता सम्मान

1. श्रीमती बिमला ग्रोवर (फरीदाबाद)
2. श्रीमती गायत्री मीना (नोएडा)
3. श्रीमती सुनीता खासा (रोहतक)
4. श्रीमती रेखा सैनी (पार्षद हिसार)

निवेदक

स्वामी आर्यवेश, बिरजानन्द एडवोकेट, प्रो. श्योताज सिंह, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य
आचार्य सन्तराम आर्य, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या

स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, (आश्रम) टिटौली (रोहतक)
दूरभाष :- 09354840454, 9466308110, 9013783101

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारी स्त्री परम शक्ति है

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन एवं महिला समता मंच के संयुक्त तत्वावधान में कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

महर्षि दयानन्द सरस्वती

दिनांक : 6 जून से 12 जून 2015 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

आशीर्वाद : स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

स्वामी इन्द्रवेश

500 कन्याएं भाग लेंगी

कन्याओं को चरित्र, नैतिकता, साहस, स्व-सुरक्षा एवं संयम की भावनाओं से ओत-प्रोत करने के लिए शिविर में अधिक से अधिक कन्याओं को भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

शिविर में विशेष

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जाएगी।
- उच्च कोटि की व्यायामाचार्यों द्वारा योगासन, प्राणायाम, जूडो कराटे आदि शारीरिक एवं आत्म रक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों द्वारा सन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

आवश्यक नियम व निर्देश

- इच्छुक छात्राएं 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता-पिता या विद्यालय के प्राचार्य द्वारा अनुमोदित कराकर 5 जून, 2015 तक प्रान्तीय कार्यालय में जमा करवा दें।
- वेशभूषाः- सफेद सूट, सफेद जुराब, सफेद जूते, केसरिया दुपट्टा, ट्रैक-पैंट, टी-शर्ट, ऋतु अनुकूल बिस्तर, कापी, पैन, टार्च आदि साथ लाएं।
- कोई भी कीमती सामान अपने साथ न लाएं।
- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

निवेदक

कु. पूनम आर्या
शिविराध्यक्ष

श्रीमती सुनीता आर्या
सह-संयोजक
9416817794

कु. प्रवेश आर्या
संयोजक
9416630916

प्रबन्ध समिति : कु. रीकू आर्या (रोहतक), कु. विकास आर्या (रोहतक), कु. मंजू आर्या, जगमतिमलिक कैथल, कु. शशि आर्या (रोहतक), राजबाला आर्या, कु. सोनिया व विनिता, सुषमा आर्या, सुमन आर्या, मुकेश आर्या, संगीता आर्या, पूजा आर्या, इन्दू आर्या, किरण आर्या, ज्योति, सुनीता, कीर्ति आर्या, रीमा आर्या, पूनम आर्या।

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा), email : yuvakparishad@gmail.com

पूर्ण ब्रह्मचारी कौन होता है?

– खुशहाल चन्द्र आर्य

ब्रह्मचारी का तात्पर्य होता है, ब्रह्म में विचरने वाला। ब्रह्म की आज्ञा के अनुसार चलने वाला। ब्रह्म का मतलब होता है सब से बड़ा। देवताओं में सबसे बड़ा देवता ईश्वर है। देवता का मतलब होता है देने वाला। ईश्वर हमें जल, वायु, अग्नि, पेड़, पौधे, फल-फूल सब कुछ बिना कोई शुल्क लिए मुफ्त में देता है। सृष्टि को रचता है, पालन करता है और समय के अनुसार उसका संहार भी करता है और हम जीवों को उसके कर्मानुसार फल भी देता है, इसलिए सबसे बड़ा है और बड़ा होने के नाते ब्रह्म कहलाता है। धार्मिक ग्रन्थों में सबसे बड़े वेद होते हैं जिसमें मनुष्य मात्र की सभी कल्याण व हित की बातें लिखी हैं, जिनके अनुसार चलने से मनुष्य अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इसलिए वेद धार्मिक ग्रन्थों में सबसे बड़े हैं। इसी प्रकार शरीर में सबसे महत्त्वपूर्ण व मूल्यवान जो वस्तु है, वह वीर्य है। इसीलिए वीर्य को भी ब्रह्म कहा गया है। इस प्रकार हमने देखा कि ब्रह्म तीन विशेष शक्तियों को कहा गया है। जो व्यक्ति इन तीनों पर पूरा अधिकार रखता है वह पूर्ण ब्रह्मचारी कहलाता है। इन तीनों की हम संक्षिप्त व्याख्या करते हैं जो इसी भांति हैं।

1. ईश्वर - ईश्वर केवल मनुष्यों का ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र का बड़ा उपकार करता है। ऊपर लिखे अनुसार ईश्वर प्राणी मात्र को बिना कोई शुल्क लिए मुफ्त में हवा, पानी, बिजली, अन्न, फल-फूल आदि बिना किसी स्वार्थ के जीवों को प्रदान करता है। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ तथा अन्तिम कृति है। इसलिए इसका विशेष कर्त्तव्य बन जाता है कि वह उस परोपकारी परमपिता परमात्मा का गुणगान करके अपनी कृतज्ञता प्रकट करे यानि अपने मन को अन्तर्मुखी बनाकर एकाग्रचित्त होकर संध्या के द्वारा उसका गुणगान करे साथ ही उसके गुणों को जैसे दया, करुणा, निष्पक्षता, परोपकारिता आदि को अपने जीवन में धारण करें जिससे अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी व सम्पन्न बने। ईश्वर ने हमें उत्पन्न किया है, इसलिए ईश्वर हमारा माता-पिता हुआ और हम सब उसके पुत्र व पुत्रियाँ हुए। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने पिता के गुणों को अपने जीवन में धारण करें और उसकी आज्ञा का पालन करें। ईश्वर के गुणगान करने से ईश्वर को कोई लाभ नहीं परन्तु मनुष्य को अनेक लाभ हैं। ईश्वर की संध्या द्वारा स्तुति, प्रार्थनोपासना करने से मनुष्य को उत्साह, उमंग, साहस व एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है जिससे उसके जीवन में सुख व शान्ति की प्राप्ति होती है। इसलिए ब्रह्मचारी को एक सच्चा ईश्वर उपासक भी होना चाहिए। इसके अभाव में वह पूर्ण ब्रह्मचारी नहीं कहलायेगा।

2. वेद - ईश्वर ने सृष्टि के आदि में जब मनुष्यों की उत्पत्ति तिब्बत के पठार पर की थी, तभी ईश्वर ने चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे, उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्वेद है, उनका क्रमशः प्रकाश करके उनके मुख से उच्चारित करवाये। जिनमें वे सभी उपदेश व शिक्षाएँ बताई हैं जिनके अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सुखी व सफल बना सकता है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो सिखाने से सीखता है और बिना सिखाये वह अज्ञानी ही बना रह जाता है। ईश्वर सब मनुष्यों का पिता होने के नाते उसका कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने पुत्रों व पुत्रियों को अच्छी शिक्षा दे, जिसको पढ़कर वह अपने जीवन को सुचारू रूप से चला सके और अपने जीवन को उत्तरोत्तर उन्नति करता हुआ मनुष्य का जो अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है उसको प्राप्त कर सके। इसलिए मनुष्य पूर्ण ब्रह्मचारी तभी हो सकता है जब वेदों को मन लगाकर पढ़ेगा और उसके अनुसार आचरण करके अपने जीवन व अन्यों के जीवन को सुन्दर, पवित्र व सुखी बनायेगा। इसलिए पूर्ण ब्रह्मचारी बनने के लिए उसको वेदों का पढ़ना तथा उसके अनुसार आचरण करना यानि वेदोनुसार चलना बहुत जरूरी है।

3. वीर्य की रक्षा करना - शरीर में सबसे महत्त्वपूर्ण व मूल्यवान वस्तु वीर्य है, इसलिए इसको भी ब्रह्म की संज्ञा दी गई है। हम जो भोजन करते हैं, वह भोजन सात रूपों में परिवर्तित होता हुआ, उसका अन्तिम रूप वीर्य कहलाता है। भोजन जब हमारे पेट में जाता है तो सबसे पहले उसका रस, फिर रक्त, फिर मांस, फिर मज्जा, फिर मेध (चर्बी) फिर अस्थी (हड्डी), फिर अन्त में वीर्य बनता है जो बहुत कम मात्रा में बनता है। वीर्य जैसी कीमती वस्तु को बिना उद्देश्य केवल कुछ क्षणों के लिए सुख का अनुभव करने के लिए उसे व्यर्थ में नष्ट करता है वह बड़ा दुर्भाग्यशाली तो है ही साथ ही बड़ा मूर्ख व अज्ञानी भी है। वीर्य को सुरक्षित रखना या खण्डित करना, मनुष्य के जो चार पुरुषार्थ हैं, उनके करने की प्रवृत्ति से सम्बन्धित हैं। वे चार पुरुषार्थ यह है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। वीर्य की रक्षा करना ''काम पुरुषार्थ में आता है। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह अपना जीवन धार्मिक बनावें यानि सच्चाई, ईमानदारी, दया, करुणा व परोपकारिता आदि को अपने जीवन में धारण करें और काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, लालच, घृणा, द्वेष पर पूरा संयम व नियन्त्रण रखें और सीमा के अन्दर ही इनका प्रयोग करें तभी मनुष्य सुखी व आनन्दित बन सकता है। मनुष्य का दूसरा पुरुषार्थ अर्थ है। यह भी धर्म के साथ ही कमाना चाहिए। यदि अर्थ कमाने में धर्म की प्रवृत्ति नहीं रखें तो वह अर्थ, अनर्थ हो जायेगा जिसमें वह स्वयं भी दुःखी होगा और दूसरों को भी दुःखी करेगा। तीसरा पुरुषार्थ काम है इसको भी धर्म के अनुसार ही करना चाहिए। जो व्यक्ति अविवाहित रहकर वीर्य की रक्षा का पूरा ध्यान रखता है, वही पूर्ण ब्रह्मचारी होता है। मेरे लिखने का तात्पर्य यही है कि पूर्ण ब्रह्मचारी बनने के लिए मनुष्य को वीर्य की रक्षा करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके साथ ईश्वर की सही उपासना करना, ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूरा विश्वास रखना तथा वेदों को पढ़कर उसके अनुसार जो अपना जीवन बनाता है, वही पूर्ण ब्रह्मचारी है।

इन अर्थों में हम महर्षि दयानन्द को पूर्ण ब्रह्मचारी कह सकते हैं। जिसने अपने जवन में कभी भी वीर्य को खण्डित नहीं किया। ईश्वर की सच्ची उपासना की और ईश्वर को सदा अपना रक्षक समझ कर सदा सत्य पर आरूढ़ रहें और कभी भी असत्य से समझौता नहीं किया। वेदों के तो वे प्रकाण्ड विद्वान थे ही और उनका पूरा जीवन वेदानुकूल तो था ही, साथ ही पूरे जीवन वेदों का ही प्रचार व प्रसार किया। इसलिए हम कह सकते हैं कि देव दयानन्द पूर्ण ब्रह्मचारी थे। वीर्य के खण्डित के विषय में महर्षि के जीवन में एक घटना आती है कि किसी ने महर्षि से पूछा कि स्वामी जी आपको कभी भी कामवासना नहीं सताती है, तब स्वामी जी ने उत्तर दिया कि मैं मेरे मन को हर समय कार्य में इतना अधिक व्यस्त रखता हूँ कि कामवासना आने का समय ही नहीं मिलता। यदि आती भी होगी तो मन को अत्यधिक व्यस्त देखकर लौट जाती होगी। यह था महर्षि दयानन्द का चरित्र जिसको मैं हृदय से श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

द्वारा गोविन्द राम आर्य एण्ड संन्स, 180
महात्मा गांधी रोड
(दो तल्ला), कोलकाता-700007
मो.:-9830135794

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक छपकर तैयार

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

यज्ञोपवीत का महत्व

छपरौली (ब्यूरो) : आदर्श नंगला के एमडी इण्टरनेशनल स्कूल में चल रहे बालिकाओं के लिए आत्मरक्षा और चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर के चौथे दिन बालिकाओं को यज्ञोपवीत यानि जनेऊ के महत्व को समझाया। शिविर में दिल्ली से पहुंची योग शिक्षक डॉ. वसुन्धरा आर्या ने कहा वैदिक काल से ही स्त्रियों और पुरुषों के लिए समान शिक्षा और संस्कार दिये जाते थे, परन्तु मुगल और अंग्रेजों की गुलामी के बाद यज्ञोपवती और नारी शिक्षा को तिलांजलि दे दी और इस पर ध्यान देना ही बंद कर दिया, परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी शिक्षा और यज्ञोपवीत का अधिकार दिया। उन्होंने बताया इसमें तीन धागे होते हैं तो क्रमशः माता, पिता और गुरु की याद दिलाते हैं और ये हमारी वैदिक परम्परा, संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक हैं। उन्होंने वीरांगनाओं से जीवन भर इसे धारण करके अच्छे संस्कार व उत्तम व्रत धारण करके जीवन सफल बनाने का आह्वान किया। बालिकाओं में फरीदाबाद से आई श्वेता, खुशी, रितू, रेशमा, चंदा, तब्बसुम, सर्वेश आदि भी शामिल हुई। इस मौके पर प्रधानाचार्य डॉ. सुनीति आचार्या, मैनेजर रविन्द्र शास्त्री, शिविर के संयोजक शिवकुमार आर्य, कीर्ति, सुमन, मनीषा, विवेक आर्य, कपिल आर्य आदि रहे।

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज अकोला में व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण शिविर का सफल आयोजन

आर्य समाज अकोला में दिनांक 15 से 19 अप्रैल, 2015 तक व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण का आवासीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग 80 बच्चों ने भाग लिया।

इस शिविर में प्रमुख मार्गदर्शक, उद्बोधक तथा प्रशिक्षक स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, आचार्य आर्ष गुरुकुल, वडलूर, कामारेड्डी तेलंगाना, दार्शनिक विद्वान व आर्यवीर ब्रह्मचारी अरूण कुमार जी मुम्बई, व्यायामाचार्य श्री शैल कुमार जी बिलासपुर तथा निसर्गोपचार तथा डॉ. धनलाल जी शेन्द्रे जी थे।

इस शिविर में बच्चों से आदर्श दिनचर्या का पालन कराया गया। प्रातःकाल जागरण के मंत्र, यज्ञ व संध्या के मंत्र, शयन मंत्र बच्चों ने याद किये। संध्या व यज्ञ करना भी सीखा। उन्होंने उपासना, साधना तथा ध्यान की विधि भी सीखी।

बौद्धिक प्रशिक्षण में बच्चों को भारतीय वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता तथा भारतवर्ष के गौरवमय इतिहास की जानकारी तथा स्वास्थ्य के नियम, आहार, ब्रह्मचर्य, निद्रा के विषय में बताया गया। साथ ही सदाचार, नैतिक मूल्य, आध्यात्म के प्रति सीख, अनुशासन, परिश्रम, परोपकार, कर्त्तव्य निष्ठा, निर्भीकता, सत्यता, सद्भाव, सहयोग इत्यादि विभिन्न श्रेष्ठ गुणों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई। धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार इत्यादि के अवगुणों का बच्चों को बोध कराया गया। इसके साथ ही योग, प्राणायाम, आयुर्वेद व निसर्गोपचार का ज्ञान भी इस शिविर में दिया गया।

आर्यवीर ब्रह्मचारी अरूण कुमार जी तथा व्यायामाचार्य श्री शैल कुमार जी ने बच्चों को व्यायाम, प्राणायाम, आसन, सूर्य नमस्कार, मार्शल आर्ट, लाठी चलाना, पिरामिड बनाना तथा विभिन्न खेलकूदों का प्रशिक्षण दिया।

बच्चों के साथ ही विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए भी उद्बोधन सत्र रखे गये। जिनमें विशेषकर स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, श्री अरूण कुमार जी ने उनका मार्गदर्शन किया। उनके लिए योगासन तथा निसर्गोपचार की जानकारी आचार्य श्री शैलकुमार जी आर्य तथा डॉ. धनलाल जी शेन्द्रे के द्वारा इस शिविर में दी गई।

इसी शिविर में दिये गये शारीरिक प्रशिक्षण संस्कार, ज्ञान तथा चारित्रिक विकास को बच्चे जीवन में अपनाकर आगे बढ़े, इसके लिए निरन्तरता बनाये रखना जरूरी था, एतदर्थ आर्यवीर दल की भी स्थापना की गई।

- डॉ. हुकुम सिंह आर्य, मंत्री,
आर्य समाज अकोला

आर्य युवक/युवती चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास एवं ध्यानोपासना (प्राथमिक स्तर) प्रान्तीय शिविर 2015

शिविर उद्घाटन एवं ध्वजारोहण 14 जून, 2015 (रविवार) सायं 4 बजे

समापन समारोह 21 जून, 2015 (रविवार) प्रातः 10 बजे

भव्य व्यायाम प्रदर्शन व ऋषि लंगर

स्थान : अग्रसेन भवन, मालवीय नगर, जयपुर

बाल-किशोर-युवा-विद्यार्थी-उद्यमी टेक्नीशियन-प्रोफेशनल्स महिला-पुरुषों को स्मृतिवर्धन व तनाव रहित उत्तम जीवनशैली हेतु योग्य, अनुभवी महिला-पुरुष शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण।

1. आत्मरक्षा हेतु-जूडो-कराटे, मार्शल आर्ट, लाठी संचालन
2. स्वास्थ्य रक्षा हेतु - योगासन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, सूर्य नमस्कार
3. बौद्धिक उन्नति हेतु - धर्म, संस्कृति, इतिहास का प्रशिक्षण व प्रतियोगिताएँ
4. आत्मबल हेतु - ईश्वरोपासना की वैज्ञानिक विधि संध्या ध्यानोपासना एवं यज्ञ

- [illegible]पाल 'यश' प्रदेशाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं संयोजक आर्य समाज समन्वय समिति जयपुर,

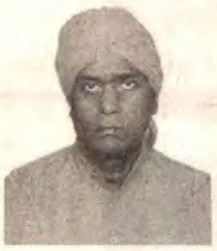

स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार कर वैदिक धर्म का प्रचार किया

आर्य समाज नया नगर, (बरकाकाना) जनपद-रामगढ़ (झारखण्ड) का रजत जयन्ती समारोह 9 से 12 मई, 2015 तक भारी जन समूह ने उत्साहपूर्वक मनाया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन श्रीमती लक्ष्मी भारती आचार्या आर्ष कन्या गुरुकुल सजूमा (कैथल) हरियाणा के ब्रह्मत्व में किया गया।

यज्ञोपरान्त निम्नलिखित विषयों पर स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती (नई दिल्ली) के सारगर्भित व्याख्यान हुए।

(1) वेद ही ईश्वरीय वाणी है - परमात्मा की सत्ता एवं महत्ता।

(2) मानव जीवन का उद्देश्य।

(3) विश्व को आर्य समाज की देन।

(4) वीर शहीदों एवं महापुरुषों की जीवन चर्चा।

स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दों में जोर देकर कहा कि मानव सृष्टि के आदि में मानव को सब सत्य विद्याओं का ज्ञान कराने वाला ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई न था। परमात्मा की सत्ता एवं महत्ता का ज्ञान हमें परमात्मा द्वारा रचित विशालकाय तारों, नक्षत्रों, ग्रहों व उपग्रहों के नियमानुसार गति करने और उनमें कम्पन्न उत्पन्न करने के कार्यों से होता है।

मानव जीवन का उद्देश्य सत्य ज्ञान प्राप्त कर प्राणीमात्र के उपकार हेतु पुरुषार्थ करना ही है।

आर्य समाज ने नारी जाति को सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा का अधिकार और मानव समाज में उच्च स्थान दिलाया। वेद को सब सत्य विद्याओं की प्राचीनतम पुस्तक का स्थान दिलाया। विभिन्नता में एकता का संदेश दिया।

वीर शहीदों और महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर ही मानव समाज उन्नति कर सकता है। उनके जीवन परोपकार की भावना से ओत-प्रोत है।

स्वामी जी के व्याख्यानों को जन समूह ने ध्यान पूर्वक सुना और सराहा। उक्त विषयों पर आचार्य लक्ष्मी भारती जी ने भी अपने विचारों से अवगत कराया।

श्री सत्य प्रकाश आर्य (पटना) और श्री राम वदन आर्य (सुल्तानपुर, उ. प्र.) आदि भजनोपदेशकों ने भजनों से जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। समारोह का संचालन पं. वासुदेव शास्त्री (हजारीबाग) ने सराहनीय रीति से किया।

- साधूराम आर्य, प्रधान आर्य समाज नयानगर (बरकाकाना)

प्रवेश प्रारम्भ

सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधू आश्रम अलीगढ़ में शिक्षा सत्र 2015-16 हेतु प्रवेश आरम्भ हो गये हैं

विद्यालय में आवासीय शिक्षा का प्रबन्ध है तथा शिक्षा निःशुल्क है। आवास और भोजन व्यय भी न्यूनतम लिया जाता है। निर्धन, गरीब व असहाय विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता प्रदान कराई जाती है।

विद्यालय अति प्राचीन है और सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय, बनारस (उ. प्र.) से सम्बद्ध है। जिसमें संस्कृत व्याकरण, दर्शन आदि की स्नाकोत्तर (एम. ए.) स्तर की शिक्षा योग्य और अनुभवी शिक्षकों द्वारा दी जाती है। व्यायाम और खेल आदि का भी उचित प्रबन्ध है। चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है।

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से सभा कार्यालय "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

- **हमेशा शान्त चित्त तथा हंसमुख रहना सीखें।**
- **आज का पुरुषार्थ ही कल का भविष्य बनने वाला है।**
- **अवगुण अपने और गुण दूसरे के देखें।**
- **तीखे शब्द कमजोर पक्ष की निशानी है।**
- **अच्छी नसीहत मानना अपनी योग्यता बढ़ाना है।**

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 5–6 जून, 2015
प्रकाशन की तिथि : 4 जून, 2015
वैदिक सार्वदेशिक
4 से 10 जून, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2095/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

मिलकर चलो, बोलो

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

—ऋ० १०/१९१/२

ऋषिः—संवननः।। देवता—संज्ञानम्।। छन्दः—अनुष्टुप्।।

विनय—हे मनुष्यो! सदा मिलकर चलो, मिलकर आचरण करो, मिलकर बोलो और तुम्हारे मन मिलकर सदा एक निश्चय किया करें। यह दैवी नियम है। देव लोग सदा 'संजानानाः' होकर—समान मन और ज्ञानवाले होकर ही—अपने कार्य—भाग को निबाहते आये हैं। असल में यह मनों द्वारा ज्ञान की एकता ही वास्तविक एकता है। मन की एकता होने पर वचन और कर्म (आचरण) की एकता होने में कुछ देर नहीं लगती। देखो, ये देव लोग सब जगह 'संजानानाः' होकर ही कार्य कर रहे हैं। आधिदैविक जगत् में देखों, अग्नि—वायु आदि देव जगत्—संचालन के लिए इकट्ठे होकर अपने—अपने भाग को ठीक—ठीक कर रहे हैं। अध्यात्म में प्राण—इन्द्रिय आदि देवों को देखो कि ये कैसे संगठित होकर जीवन को चला रहे हैं। पैर में कांटा चुभता है तो त्वचा—प्राण—मन—हाथ आदि सब देव एक क्षण में कैसा सहयोग दिखाते हैं। आधिभौतिक जगत् में भी सब ज्ञानी=देव—पुरुष पुराने काल से लेकर आज तक संगठित होकर ही बडी—बड़ी सफलताएँ प्राप्त करते रहे हैं। 'मिलना' दैवी प्रवृत्ति है; क्षुद्र स्वार्थों को न छोड़ सकना और न मिलना आसुरी है, अतः हे मनुष्यों! तुम मिलो, अपने सैकड़ों क्षुद्र स्वार्थों को छोड़कर एक बड़े समष्टि—स्वार्थ के लिए सदा मिलो। लाखों—करोड़ों के मिलकर काम करने से जो तुम्हें बड़ी भारी सामूहिक सिद्धि मिलेगी, उससे फलतः तुम लाखों—करोड़ों में से प्रत्येक व्यक्ति के भी सब सच्चे स्वार्थ अवश्य सिद्ध होंगे। मिलने में बड़ी भारी शक्ति है। तुम मिलकर चलो, मिलकर करो तो कौन—सा कार्य असाध्य है। तुम मिलकर बोलो तो संसार को हिला दो और मिलकर ध्यान करने में तो अपार—अपार शक्ति है, अतः हे मनुष्यो ! मिलो, मिलो ! सब प्रकार से मिलकर अपने सब अभीष्ट सिद्ध करो।

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! **संगच्छध्वम्**=मिलकर चलो, आचरण करो, **संवदध्वम्**=मिलकर बोलो, और **वः**=तुम्हारे **मनांसि**=मन **संजानताम्**=मिलकर ज्ञान प्राप्त करें, समान ज्ञानवाले हों; **यथा**=जैसेकि **पूर्वे देवाः**=पहले के देव लोग **संजानानाः**=मिलकर जानते हुए, एकज्ञान होते हुए **भागम्**=भजनीय वस्तु की, अपने भाग की **उपासते**=उपासना करते, उपलब्धि करते रहे हैं।

सामार- **'वैदिक विनय' से**
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

—: प्रकाशक :—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक सहमति होना अनिवार्य नहीं है।